प्रौढ़ शिक्षा माला, संख्या ९६
भारत सरकार द्वारा स्वीकृत

No. 28

धूलजी



रसोइया



इदारा तालीम व तरक्की जामिआ, देहली

मक्तबा जामिआ लि०
देहली

Nr 20

दो शब्द

इस पुस्तक-माला का उद्देश्य है कि कम पढ़े-लिखे सियानों में :

(१) पुस्तकें, अखबार और पत्रिकाएं आदि पढ़ने और समझने की योग्यता बढ़े।

(२) जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली बातों के बारे में बुनियादी जानकारी और शब्द-भण्डार प्राप्त हो।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये, इदारा तालीम-व-तरक्की जामिआ (प्रौढ़ शिक्षा-विभाग, जामिआ मिल्लिया) देहली ने १० साल तक सियानों में काम करने के बाद उनकी शिक्षा का एक पाठ्य-क्रम तैयार किया है। वह इस पाठ्य-क्रम के अनुसार सियानों की रुचि और लाभ, उनकी मानसिक योग्यता और शौक को ध्यान में रखकर छोटी-छोटी पुस्तकें प्रस्तुत करवा रहा है। अब तक इस विषय की ३०० पुस्तकों के मसवदे हिन्दी में तैयार हो चुके हैं।

भारत सरकार की एजुकेशन मिनिस्टरी के हम आभारी हैं कि उसने हमारे इस परीक्षण को पसन्द किया। उसकी आर्थिक सहायता से ही हम ये पुस्तकें आपको भेंट कर रहे हैं।

शफीकुर रहमान किदवाई (डायरेक्टर)
मुश्ताक अहमद (प्रधान सम्पादक)
वाई० सुरेन्द्र पाल (सम्पादक)
जिनेन्द्र कुमार ”
नगीन चन्द ”

धूलजी रसोइया

हफ़ीज़ को मैं भूलना भी चाहूँ तो नहीं भूल सकता। खानसामा (रसोइया) उसके बाद भी बहुत से आये परन्तु वह बात कहां? वह बड़ा होशियार आदमी था, चालाकी और धोखा देने में नहीं बल्कि अपने काम में। वैसे आदमी बहुत सीधा और भोला था।" साहब लोगों " में बहुत काम किया था। सर्टीफिकेटों का एक पुलन्दा उस के साथ सदा रहता था। वह कहा करता था, " छः महीने हिन्दुस्तानी खाने पकाऊँगा और कोई खाना दोबारा नहीं आयेगा। इसी तरह छः महीने अंग्रेजी खाने पकाऊंगा और हर रोज नये नये।"

शायद इसमें कुछ शेखी भी हो परन्तु आदमी डींगें मारने वाला नहीं था। जो चीज पकाई खूब पकाई। दलिया आज तक बदनाम था। जिस दिन पकता सब नाक भौंह चढ़ाते

और मन मार कर खाते थे। मगर वाह रे हफीज़! जिस दिन उसने दलिया बनाया, काया पलट दी। अब दलिया हलवा और रवड़ी बन गया। दाल ऐसी पकाता था कि गोश्त भी मात हो जाए। और यह नहीं कि घी अधिक डालता हो या दालें और दलिया किसी खास मशीन में बनाता हो। कुछ नहीं, चीजें सब वही, मगर स्वाद अलग अलग। दिन भर खाना पकवाइये, रात भर चूल्हा जलवाइये कभी इनकार नहीं करता था। उसे तो वास्तव में भोजन बनाने का चाव था। इस शौक के साथ पकाता था जैसे कोई चित्र-कार चित्र बनाए।

परन्तु भोजन बनाने के सिवाए कोई दूसरा काम उससे नहीं ले सकते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि भिश्ती नहीं आया, खाने में देर हो गई। भाई साहब नाराज हुए और बोले, " कुवां तो पास ही था, तुमने खुद ही पानी क्यों नहीं भर लिया। और नहीं भरा तो गलती तुम्हारी है।" उसने कहा, " साहब! यह मेरा काम नहीं है। मेरा जो काम है उसके लिए हर दम हाजिर हूँ।" बस इतनी सी बात पर वह रूठ कर चला गया।

वास्तव में वह था ही खानसामा । इस काम के सिवाय न दूसरा काम जानता था और न कर सकता था । एक बार एक बड़े मजे की बात हुई । मैंने उसे अपने पड़ोसी का एक लिफाफा दिया कि जरा लैटर-बक्स में डाल देना । बहुत दिन हो गए पर उसका उत्तर नहीं आया । जिन सज्जन का खत था, वे कहने लगे, "मेरा विचार है कि चिट्ठी डाली ही नहीं गई, वरना जवाब जरूर आता ।" उनकी बात सही निकली । जो रसोईघर में जाकर देखा तो लिफाफा दो महीने से आले में पड़ा था !

खीर में नमक

हमारे एक खानसामा अब्दुल्ला हैं जो "मौलाना अब्दुल्ला खीर वाले" के नाम से प्रसिद्ध हैं । आदमी पढ़े लिखे हैं । पकाते भी पढ़कर हैं । कभी कभी तो पकाने में भी लिखते पढ़ते हैं । एक बार आप खीर बना रहे थे । पाक शास्त्र की पुस्तक सामने थी । पुस्तक में खीर बनाने की विधि देखते जाते थे और खीर घोट रहे थे । संयोग से पुस्तक का पन्ना उलट गया । सामने विधि आ गई किसी साग की । आपको खबर नहीं हुई । समझे वही खीर वाला

पन्ना है। वहां लिखा था, "अब नमक डालो।" बस, अब्दुल्ला ने झट डिब्बा उठाया और नमक झोंक दिया। अब जो खीर सामने आई और चखी गई तो नमकीन। अब्दुल्ला साहब बुलाए गए। उन्हों ने सफाई में पुस्तक पेश की। पुस्तक देखी तो पता चला कि आप दूसरा पन्ना देख गए। उस दिन से उनका नाम "अब्दुल्ला खीर वाले" पड़ गया।

खीर पकाई जतन से और चर्खा दिया जला।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा॥

खैर यह संयोग की बात थी, वैसे आदमी बहुत समझदार है। सभी प्रकार के भोजन बहुत स्वादिष्ट बनाता है। फिरनी तो उस जैसी कोई बना ही नहीं सकता। पिछले दिनों में उसे अपने मन माफिक कोई नौकरी नहीं मिली तो एक कारखाने में रंगाई का काम करने लगा। परन्तु अब फिर अपने काम में है।

रसोइयों के सरदार मल्लू

रसोइयों की सरदारी यदि किसी को दी जा सकती है तो भाई मल्लू को। वह पक्का रसोइया है। भोजन बनाने में बड़ा निपुण है। मेहनत-मजदूरी और भाग-दौड़ में सबसे आगे रहता है।

साथ ही मान में भी किसी से पीछे नहीं। एक बार नौकरी छूट गई। बहुत दिनों तक बेकार रहा। फिर किसी बाबू के पास नौकर हो गया। वहां बबुवाइन जी से खटपट हो गई। बस नमस्कार किया और चला आया। बहुत दिनों तक कहीं काम नहीं मिला। अंत में मेहनत मजदूरी शुरू कर दी और खूब कमाया।

इसके बाद फिर भोजन बनाने की धुन सवार हुई। कालिज के चौराहे पर एक दुकान लगा कर बैठ गया। हुनर के सिवाय पास में कुछ न था। होड़ के लिये एक होटल वाला पहिले ही से मौजूद था। मल्लू ने कर्ज लेकर बात बनाई तो एक और आ गया। मगर मल्लू घबराया नहीं। सोचा अब आ गये हैं तो जाएंगे नहीं। न जाने बेचारे ने किन २ कठिनाइयों का सामना किया, परन्तु हिलने का नाम नहीं लिया। होड़ में एक गया तो दूसरा आया और दूसरा गया तो तीसरा आ धमका। मल्लू होड़ करते २ हांप जाता था परन्तु सौगंध खा ली थी कि जगह नहीं छोड़ूंगा।

रहिमन चुप होय बैठिये देख दिनन के फेर।
जब दिन नीके आइये बनत न लागे देर॥

अंत में दिन फिरे और कालिज के एक प्रोफेसर साहब समय पर काम आए। उन्होंने हर तरह मदद देने का वचन दिया। अब मल्लु की जान में जान आई। इस समय शहर में उसके दो होटल हैं। काम बढ़ रहा है और होड़ करने वालों का नाम नहीं। वह मेहनत और ईमानदारी से काम करता है और अपने काम में जी लगाता है। फिर काम क्यों न बढ़े ?

रामपुरी रसोइयों की पल्टन

एक जमाने में नवाब रामपुर की भोजन-शाला मशहूर थी। कहते हैं इनके यहां कोई पांच सौ रसोइये और खानसामा थे। सब की मोटी २ तनखाहें थीं। कोई मोहन-भोग बनाने में चतुर था तो कोई हलवा बनाने में निपुण, कोई बिरयानी और कोरमा बनाने में उस्ताद था तो कोई जरदा खूब बनाता था, कोई दाल बनाने में अपना सानी नहीं रखता था तो कोई खीर और फिरनी को आकाश पर पहुंचाता था। कोई साग सब्जियों में शान दिखाता तो कोई खिचड़ी में नाम पाता था। मतलब यह है कि हर प्रकार के भोजन का उस्ताद मौजूद था। महल से तनखाहें तो मिलती ही थीं पर नवाब

साहब इनाम आदि अलग देते थे।

एक छटांक खिचड़ी

परन्तु देहली में कुछ बादशाह ऐसे भी हुये हैं जो बहुत सादगी से रहते और सादा खाना खाते थे। कहते हैं कि बादशाह औरंगजेब का एक रसोइया था। उसे सूखी तनखाह के सिवा ऊपर की आमदनी नहीं थी। सारी आयु ऐसे ही बीत गई। स्वयम् बूढ़ा हो चला, और संतान जवान हो चली। उसे अपनी लड़कियों की बहुत चिंता थी जो ताड़ की तरह बढ़ रही थीं। दान-दहेज़ के लिए रुपये की जरूरत थी। बादशाह का रसोइया था पर पास में पैसा न था। वही बात थी, ऊंची दुकान फीका पकवान। बड़ी चिंता में रहता था पर बादशाह से कहने का साहस नहीं था।

अंत में उसे एक उपाय सूझा। उसने एक दिन बादशाह की खिचड़ी में नमक तेज कर दिया। खाना बादशाह के सामने गया। वे सज्जन पुरुष थे। उसे ऐसे ही चट कर गये। माथे पर बल तक न आया और न होठों पर हंसी। रसोइये ने देखा कि वार खाली गया। मगर साहस न छोड़ा। दूसरे दिन बिल्कुल फीकी खिचड़ी सामने लाकर

रख दी। बादशाह ने वह भी खा ली। जब सब उपाय बेकार हो गये तो हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया और बोला, "हजरत मैं आपका दास हूं। जवान लड़कियां घर में बैठी हैं। लोग नाम धरते हैं, परन्तु कौड़ी पास नहीं कि उनके हाथ पीले करूं।"

बादशाह ने कहा "अच्छा, कल हमारी खिचड़ी एक छटांक अधिक पका लेना।" रसोइया हैरान था कि मेरी बिनती का यह क्या जवाब मिला। इन दो दानों से बेटियों का ब्याह कैसे होगा। ख़ैर खिचड़ी पकी और सामने आई। बादशाह ने एक छटांक खिचड़ी के सात भाग किये। फिर उन्हें सात थालों में अलग अलग लगवाया और कहा, "हमारे सातों मंत्रियों को एक एक थाल दे आओ।" मंत्रियों के घर बादशाही थाल पहुंचा। बड़ी बात थी, क्योंकि आज तक थाल तो क्या खील का एक दाना भी महल से नहीं आया था। बड़ी खुशियां मनाई गईं। एक एक हजार अशरफियों का तोड़ा हर एक ने रसोइये को इनाम दिया। अब क्या था रसोइया निहाल हो गया और धूम-धाम से अपनी बेटियों का विवाह रचाया।

संसार अभी बदला नहीं है। आदमी की

नीयत साफ़ हो तो अब भी सब कुछ मौजूद है। अब भी अच्छे भोजन की कदर करने वाले बहुत हैं। अच्छे रसोइये के लिये कहीं भी काम की कमी नहीं। हाँ आदमी थोड़ा पढ़ा लिखा हो और बात-चीत ढंग से करना जानता हो। बस फिर छोटे बड़े हर एक तक उसकी पहुँच है। रईस के पास रहे या राजा नवाब के पास, हर कहीं उसका नाम होगा।

मेहनत का फल

सोहन साधारण सा रसोइया था। बल्कि यों कहिए कि बैरा (खाना खिलाने वाला) था। कभी यों ही पका लेता था। धीरे धीरे दो चार चीजें आगईं। समय पड़ने पर काम दे जाता था, और बस। पर आदमी था मेहनती और सीखने का शौकीन। लोगों ने कहा कि इसे किसी उस्ताद के पास बिठा दिया जाए तो हाथ सध जायेगा। दस पांच चीजें और आ जायेंगी। वह बंबई चला गया। छः महीने ताज महल होटल में रहा। अब जो वापिस आया तो पूरा रसोइया बन चुका था। सोहन की धूम मच गई। जो चीज पकाता है नम्बर एक, लोग उंगलियां चाटते रह जाते हैं। हां कमी इतनी है कि लिखना-पढ़ना बिल्कुल नहीं जानता। जरा २ हिसाब के लिये दूसरों की खुशा-

मद करनी पड़ती है। और नहीं भी करनी पड़ती क्योंकि इसकी सहायता के लिये मुनीम जी हैं। मगर दस पांच काम करने वाले इनके नीचे हैं और इनमें कुछ पढ़े-लिखे भी हैं। इस लिये इन्हें खुद शर्म आती है। परन्तु यह खुशी की बात है कि अब उन्होंने रात को हिन्दी पढ़ना शुरू कर दिया है।

अनपढ़ चन्दन

मैंने चन्दन को देखा। बड़ा साफ सुथरा रहता था। हर दम सफेद और उजले कपड़े पहिने रहता था। काम का मेहनती और बोली का मीठा। मगर दो पैसे की बर्फ भी ड्राइवर से लिखवाई जायेगी! ड्राइवर को कभी समय मिलता है और कभी नहीं भी मिलता है। चन्दन कहता था हर महीने चार-पांच रुपये का फर्क पड़ जाता है। फर्क न हो तो क्या हो? पराये के भरोसे पर काम करने में तो यही होता है। आदमी या तो स्वयम् नुकसान झेले, अपनी तनखाह में से कटाये या फिर बेईमानी करे और झूठा हिसाब बनाये।

गंदा रसोइया

कल्लू में और तो सब गुण अच्छे हैं, बस

एक खराबी है। मैंने उसे कभी साफ़ नहीं देखा। कपड़े सदा गंदे रहते हैं। मंगलवार को बदलता है तो वह भी मैले। कुछ कामों में तो मैलापन निभ जाता है परन्तु कुछ काम ऐसे हैं जिन में यही अवगुण है। शहर में एक कातिब (हाथ से पुस्तकें लिखने वाला) है। बहुत सुन्दर लिखता है। सुना है कि इसे भी साफ़ रहने से चिढ़ है। लेकिन हाथ में हुनर है। जरूरत वाले जाते हैं। बार २ खुशामद करते हैं। और काम हो जाए तो दाम अलग देते हैं।

अब बढ़ई है, जुलाहा है, धोबी है, सब गंदे रहते हैं तो रहा करें, हमें क्या? हमें तो काम उजला और साफ़ चाहिये। किन्तु यदि रसोइया गंदा हो तो फिर खाने का सारा स्वाद ही किर किरा हो जाता है। यही कारण है कि बड़े होटलों में और साहब लोगों के यहां जब बैरा खाना परोसता है तो अपनी साफ़ सुथरी वरदी पहन लेता है। यह केवल दिखाने की सफ़ाई है। परन्तु जब कुछ न हो तो इतना ही बहुत है, ताकि खाते समय आदमी का ध्यान उसके मैले कपड़ों और गंदे बरतनों की ओर ना जाये। सफाई तो वास्तव में दिखावे की चीज़ ही नहीं। यह तो तबियत की

चीज़ है। जब आदमी की तबियत में सफाई होगी तभी वह सफाई का ध्यान भी रखेगा ।

रसोईघर में पचासों काम हैं और सैकड़ों बर्तन। न मालूम कौन २ से बर्तन साफ़ हैं और कौन २ से मैले। इन सब बातों का जवाब बस रसोइया है। यदि वह सफाई पसंद है तो एक एक चम्मच का विश्वास है, वरना सारे रसोईघर का भी तनिक विश्वास नहीं।

बर्तनों में कीटाणु

बर्तनों को धोना भी एक हुनर है। विलायत में तो सचमुच इसे भी एक विशेष काम समझा जाता है। इस काम को खास तौर से लोग सीखते सिखाते हैं। बर्तन यदि ठीक रीति से साफ़ न किये जायें तो एक समय की चिकनाई के बुरे प्रभाव से दूसरे समय में बदबू पैदा हो जाएगी। परन्तु बदबू तो बड़ी चीज़ है। असली चीज़ तो वे कीटाणु हैं जो आंखों से दिखाई नहीं देते। फिर भी वे रोगों के पिटारे हैं। कीटाणु बर्तनों के इस ज़रा से मैल में इसी तरह घर बना लेते हैं, जैसे नाली के कीड़े नालियों में। इस लिये बर्तनों को साफ़ और गर्म पानी से

उसी दम धो डालना चाहिये । फिर साफ़ झाड़न या कपड़े से अच्छी तरह पोंछ कर सुखा लेना चाहिये।

भोजन बनाना एक कला (हुनर) है तो भोजन परोसना और खिलाना भी एक कला है। यह भी हर आदमी के बस की बात नहीं । इसमें भी सब से पहली चीज़ सफ़ाई है।प्लेटें, थालियां, कटोरियां, गिलास, चम्मच आदि सब साफ-सुथरे मंजे हुए हों।

धूल जी की दाल

हमने पण्डित जी को सुनाया, "दाल, जी का काल अम्मा मत पकाइयो दाल" इस पर मां बोली, "दाल बच्चे पाल, बेटा रोज पकेगी दाल" इस पर पंडितजी ने सुनाया कि एक राजा के यहां धूलजी नाम का एक रसोइया आया। उसके काम की बानगी देखने के लिये दो-चार दिन को उसे रख लिया। राजा ने अपने सब मित्रों को खाने पर बुलाया कि सब भोजन खायें और रसोइये के बारे में अपनी राय दें। रसोइये ने एक लम्बी चौड़ी सूची (फ़िहरिस्त) बनाई। पंद्रह बीस चीज़ें मगवाईं और एक अलग रसोईघर में जाकर जुट गया ।

शाम को सब लोग इकट्ठे हुये। भोजन का

समय हो गया पर भोजन नहीं आया। जब हमने रसोइये से कारण पूछा तो कहने लगा "अभी लाता हूँ जरा दम पर है।" अभी अभी में उसने एक घंटा लगा दिया। इस के बाद एक प्लेट लेकर आया और कहने लगा, "सरकार ! देर हो गई है। आप लोगों को भूख लगी होगी। ज़रा इस दाल को चखिये। मैं अभी दूसरी चीज़ें लाता हूँ।" सबको भूख लग ही रही थी। लोगों ने कहा, "आओ इसी से शुरू करें" अब जो चखी तो क्या कहने उस दाल के। जरा सी देर में प्लेट साफ़। रसोइये को आवाज दी कि दाल और लाओ। उसने कहा, "महाराज ! दूसरी चीजें तैयार हैं।" लोगों ने कहा "हां ! हां ! ठीक है, मगर तुम तो दाल ही लाओ।" दाल आगई। सब चट हो गई। तीसरी बार मंगाई, चौथी बार मंगाई। अन्त में रसोइये ने कहा, "महाराज ! आप यह क्या कर रहे हैं ? दूसरी सब चीजें बेकार जायेंगी। एक-आध और चीज लाने की आज्ञा तो दीजिये।" परन्तु सबने एक आवाज में कहा, "इस दाल से बढ़िया तो कोई चीज हो ही नहीं सकती। तुम तो दाल ही लाओ"। सब ने दाल ही दाल से पेट भर लिया। अंत में उसने थोड़ा सा मीठा लाने की

आज्ञा मांगी तो लोगों ने साफ इन्कार कर दिया।

जब सब लोग हाथ धो चुके और बैठ कर रसोइये के कमाल की तारीफ़ करने लगे तो धूल-जी आया, झुककर नमस्कार किया और बोला, "महाराज! मैंने केवल दाल ही बनाई थी।"

काम-धंधे

इस पुस्तक माला की निम्न लिखित पुस्तकें बड़ी रोचक और दिलचस्प हैं। इन्हें पढ़कर लाभ उठाइये:—

१. गोपी ताँगेवाला
२. सम्पत कहार
३. अब्दुल रहमान राज
४. छोटेलाल बढ़ई
५. कल्लू हलवाई
६. भूलजी रसोइया
७. द्वारका प्रसाद नाई
८. प्यारेलाल दर्जी
९. फूलचंद–मूलचंद पंसारी
१०. मधु मक्खी पालिये, लाभ उठाइये
११. मुर्गी पालिये, लाभ उठाइये
१२. मछली पालिये, लाभ उठाइये

प्रत्येक पस्तक का मूल्य चार आने

मिलने का पता:

मक्तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआनगर, देहली

यद प्रेस देहली कलकत्ता आर्ट प्रेस (टाइटिल)